मॉरिशस के हिंदी कथा साहित्य में भारतीय सांस्कृतिक जीवन-मूल्य

डॉ. उमेश कुमार सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी और तुलनात्मक अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 [महाराष्ट्र] भारत

सारांश

मॉरीशस दुनियां के मानचित्र पर आप्रवासियों से पल्लवित और पुष्पित एकमात्र देश है जिसे गिरमिटिया आप्रवासियों ने अपने खून-पसीने से सींचकर बनाया है. यहाँ के जन-जीवन में भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव, जीवन-मूल्य एवं आस्था की झलक देश में प्रवेश करते ही कदम-कदम पर देखा जा सकता है. यह देश भारत से हजारों समुद्री मील की दूरी पर स्थित एक लघु भारत के रूप में विख्यात देश है. इसका प्रमुख कारण इस देश में 19वीं शताब्दी में दुनियां का सबसे बड़ा विस्थापन हुआ था जिसके तहत साढ़े चार लाख भारतीय स्त्री-पुरुषों को अच्छे काम और सुन्दर जीवन के सपनों का प्रलोभन देकर लाया गया था. मॉरीशस आप्रवासियों के परिश्रम से बना एक हरा-भरा प्रजातांत्रिक देश है जिसमें भारतीय, अफ़्रीकी, चीनी और अनेक धर्मों को मानने वाले लोग एक साथ हिल-मिलकर प्रेम के साथ रहते हैं, जिनकी अपनी मातृभाषा अधिकांशतः क्रोइल और हिंदी मिश्रित भोजपुरी भाषा है वैसे तमिल, तेलगू, मराठी एवं चीनी भाषा बोलने वाले लोग भी रहते हैं. इन सभी की संस्कृति भिन्न-भिन्न हैं. इसीलिए रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान आदि भिन्न दिखलाई पड़ता है परन्तु आचार-विचार और सदभाव के मामले में भारत के समरूप ही दिखलाई पड़ता है. यहाँ की शांति और एकता को देखकर लगता है कि यहाँ सही मायने में गंगा जमुनी संस्कृति साकार रूप लेकर जीवंत हो रही है. संस्कृति का संबंध व्यक्ति और समाज में निहित संस्कारों से हैं और उसका निवास उसके मानस में होता है. दूसरी तरह से "संस्कृति वह मूल्य है जो हम सबको आपस में एक दूसरे के सहयोग, सहकार, एवं संवेदनशील डोरी में बांधे रखती है". मेरी दृष्टि में भारतीय संस्कृति शहद की तरह मधुर,करेले की तरह कड़ुवी एवं मिर्च की तरह तीखी है. इन तीनों के अन्दर औषधीय गुणों से परिर्पूर्ण खजाना भरा होता है. इसीलिए भारतीय संस्कृति के संपर्क में जो व्यक्ति आया, वह भारत का होकर रह गया. यहाँ यवन शक हूण लूटने के उद्देश्य से आये थे किन्तु यही इस जमीन के होकर रह गए. यही कारण हैं कि भारतीय संस्कृति आज तक अमरबेल की तरह संरक्षित और सुरक्षित ही नहीं है बल्कि निरंतर विकासमान स्थिति में है.

कठिन:- संस्कृति -Culture, **संवेदनशीलता** - Sensitivity, **परिवेश-** Environment, **अभिशापित** -Cursed, **गिरमिटिया आप्रवासियों-** Indentured Immigrants, **औषधीय-** Medicinal

शोध प्रविधि / Research Methodology :- इसमें आधुनिक आलोचनात्मक और समीक्षात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है ताकि शोध को उसके अंतिम लक्ष्य तक पहुंचाया जा सके।

इस शोध पत्र में मॉरीशस के जन-जीवन में व्याप्त भारतीय सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों, आचार-विचार एवं विश्वास आदि की परख के लिए इस देश के प्रसिद्ध लेखक अभिमन्यु अनत की कहानी 'ज्वार-भाटा',भानुमती नागदान की कहानी 'दरार' एवं थोड़े से रूमानी हो जाओ,रामदेव धुरंदर की कहानी 'मोड़', डॉ हेमराज सुन्दर की कहानी 'नवनिकेतन' और 'वह अभिशापित नहीं थी'के अतिरिक्त धनराज शम्भु की कहानी 'गौ माता'आदि के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों की पड़ताल की जायेगी किन्तु यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि किसी भी देश के विकास की दौड़ में सबसे अधिक प्रभावित होने वाली स्त्री ही होती है. यह सत्य है कि नागदान की कहानियों में मॉरीशस में व्याप्त भारतीय सांस्कृतिक जीवन को बड़े ही सशक्त और मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है. जिस पर पश्चिम का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है किन्तु इसका तात्पर्य यह बिलकुल नहीं है कि

भारत इस विकास से प्रभावित नहीं हुआ है. भारत भी पश्चिम देशों के विकास की चपेट में आ गया है परन्तु महानगरों के जीवन को छोड़कर वहां का ग्रामीण जीवन अभी भी पूर्ण रूपेण पश्चिमी प्रभाव से अछूता दिखलाई पड़ता है.

यह भी शत-प्रतिशत सत्य है कि इस देश के नागरिक आज से दो सौ वर्ष पूर्व भारत से आए हुए पूर्वजों की संतानें हैं, जो आज भी भारतीय मूल्यों के साथ धार्मिक आचार-विचार और पूजा-पाठ आदि का पालन बड़े विधि-विधान के साथ करते हुए अपना जीवन यापन करते हैं. यहाँ प्रत्येक हिन्दू के घर में मंदिर अवश्य होता है. इन सब बातों के होने पर भी यहाँ के जन-जीवन में पश्चिम का प्रभाव बहुलता में घुलता हुआ दिखलाई पड़ता है. मॉरीशस का भारत से सांसकृतिक रूप से बहुत गहरा सम्बन्ध है.

यहाँ पर भारत की स्थिति के बारे में भी विचार करना आवश्यक हो जाता है. आज भारत पर भी बाजारीकरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है इससे इनकार नहीं किया जा सकता है किन्तु उनमें अपने बुजुर्ग माता-पिता के प्रति स्नेह मॉरीशस की तुलना में कुछ अधिक दिखलाई पड़ता है.यहाँ की कहानियों में इसका जिक्र बड़ी बेबाकी के साथ किया गया है. सौ "साल की सालगिरह" कहानी में अपने बुजुर्गों के प्रति प्रेम के बारे में इसका उदाहरण देखा जा सकता है. जब सौ वर्ष की स्त्री की सालगिरह मानते हैं और उन्हें इस अवसर पर सम्मानित किया जाता है. उस समय एक पत्रकार तुलसी से प्रश्न करता है. आपकी जिंदगी में क्या तमन्ना है इस पर आप क्या कहेंगी? "तुलसी ने कहा बेटा ! यदि दे सको तो आज इसी समय मुझे मौत दे दो, आज मैं खूब साफ़ हूँ, महकी हुई हूँ आज के पल जी लेने के बाद मुझे फिर उस गन्दगी जिंदगी में मत धकेलो, जहां पर बासी खाना, मैला कमरा, मैले कपड़े और गाली, ताने-बाने हों. मैं लोगों के चेहरे देखने को तरस जाती हूँ, दो मीठे बोल सुनाने को तरस जाती हूँ"1इस कहानी में उनकी स्पष्टवादिता के आधार पर कहा जा सकता है कि भानुमती नागदान एक सशक्त लेखिका हैं जिन्होंने यहाँ की जिंदगी में हो रहे बदलावों के हर एक क्षण को बड़ी बारीकी से देखा और परखा है.

नागदान की कहानी "थोडा रूमानी हो जाएँ" में बदलते हुए मूल्य, परिवेश और सोच पर सीधा व्यंग्य किया गया है. "प्रभा मेरी बात गौर से सुनों ! तुम किसी दोस्त को नहीं अपना सकती. हमारा समाज अभी तक रूढ़िग्रस्त है, पुराने विचारों में जकड़ा हुआ है. स्त्री और पुरुष के बीच की दोस्ती के सम्बन्ध नहीं समझ पायेगा और स्वीकारेगा भी नहीं. सालों लग जायेंगे इस जिंदगी को अपनाने में. चाहे वह कितना पवित्र क्यों न हो और प्लातोनिक क्यों न हो, मेरी तो यह राय है." 2.यह एक विधवा स्त्री के अकेलेपन की कहानी हैं जो अपने अकेलेपन से निरंतर जूझती रहती है.

भारत के परिवारों की सभी विशेषताएं मॉरीशस के परिवारों में कुछ कम और अधिक शत-प्रतिशत दिखलाई पड़ती हैं जिसकी स्पष्ट झलक हमें "दरार" कहानी में देखने को मिलती है. "घर जिसे हमारी संस्कृति में मंदिर माना जाता है, घर,माँ और ममता का प्रतीक होता है. जहां पर अपनों का बसेरा होता है. प्रेम-प्यार और आदर भाव का सम्मान होता है. जहाँ पर पूजा -पाठ, देवी-देवताओं की आराधना की जाती है, आँगन में तुलसी के क्यारे होते हैं. हनुमान जी की झंडियाँ हवा में फहराती होती हैं. घर जहां पर दुःख-सुख, हंसी-खुशी और आंसूं का संगम होता है. छोटे बड़ों का मेल होता है. एक दूसरे की मान

मर्यादा का ख्याल रखा जाता है. सब घर के सदस्य दु:ख-सुख के साथ होते हैं." 3.इस प्रकार इस कहानी के आधार पर विश्लेषण किया जा सकता है कि एक स्त्री की चाहत बहुत छोटी सी होती है वह सदैव अपनी छोटी से दुनिया में खुश रहती है. उसकी चाहत के अंतर्गत अपने पति और अपने परिवार की खुशियों से अधिक, न उसने कभी माँगहै,और न उससे कभी कम मांगती है.

भारतीय संस्कारों में पली बड़ी मॉरीशस की स्त्री के विचारों को इस उदहारण के द्वारा स्पष्ट रूप से देखाजा सकता है, "जब एक सुहागिन स्त्री का पति उसके रहते हुए दूसरी स्त्री रोजा से शादी करता है. तब एक पतिवृता स्त्री की दुनिया ही उजाड़ जाती है. तब घर के लोग इस परिस्थिति से निकलने के उसे अलग-अलग निवारण बतलाते हैं. माँ कहती है. यह सब कुछ होता ही रहता है तुम संतोषी माँ का वृत्त करो. भाई ने कहा अपने पैरों पर खड़ी हो., अपनी प्राब्लम खुद सोल्व करो, भाभी ने कहा मैं तो तलाक ले लेती, मेरी सहेली ने कहा तुम उसे सबक सिखाओ, मेरे दोस्त ने कहा तुम जवान हो, सुन्दर हो नई जिंदगी शुरू करो., पंडित जी ने कहा - गृह हैं. उपाय करना पडेगा, मैं क्या करूं". 4 परन्तु इन सबके बावजूद उस स्त्री का निर्णय मॉरीशसीय साहित्य में ही नहीं बल्कि भारतीय और विश्व साहित्य में भी बेजोड़ कहा जा सकता है. "पति के साथ मेरा सम्बन्ध परिवार से है, बच्चों से है, रिश्तेदारों से है, कुल देवी देवताओं से है. समाज से है, क़ानून से है. तो क्या में यह सब छोड़ दूं" 5. वह स्त्री अंत में इसके बाद निर्णय लेती है कि "मैं दान की पत्नी बनकर न सही , इस घर की सदस्य बनकर तो जी सकती हूँ. मैं बच्चों की माँ हूँ, हक़ है मेरा. मैं पचास साल की भद्र महिला हूँ. मुझे इज्जत चाहिए. मैं खानदानी हूँ. दान को जो भी फैसला करना है देखा जाएगा, मेरे बारे में मैं हूँ, मैं रहूंगी अपनी मर्यादा के साथ"6.मेरी दृष्टि में यह भारतीय संस्कृति और भारतीय पतिवृता नारी का अद्भुत उदाहरण कहा जा सकता है जो अपने परिवार को टूटने से बचाने के लिए स्वयं संकल्प लेती है. इतना ही नहीं वह अपने सीने पर पत्थर रखकर अपने पति को दूसरी स्त्री के साथ रहना तक स्वीकार कर लेती है किन्तु किसी भी स्थिति में अपने परिवार को टूटने एवं बिखरने नहीं देती है.

यह देखा गया है कि सांस्कृतिक प्रभाव को आधुनिकता प्रभावित अवश्य करती है परन्तु वह किसी भी देश के सांस्कृतिक जुड़ाव को कभी ख़त्म नहीं कर सकती है. आज मॉरिशस में गिरमिटिया आप्रवासियों की चौथी और पांचवी पीढ़ी निवास कर रही है किन्तु इस देश के नागरिकों पर भारतीय संस्कृति और संस्कारों के प्रभाव कम नहीं हुए है. वे आज भी पर्व, तीज-त्यौहारों एवं शादी-विवाह आदि को बड़ी आस्था और भक्ति भाव के साथ मानते ही नहीं हैं बल्कि उन्हें अपने को हिन्दू मानने और हिन्दू होने पर गर्वभी होता हैं.

आज अभिमन्यु अनत हमारे बीच में नहीं हैं किन्तु उनका लेखन, उनकी साहित्यिक धरोहर हमारे पास है. उनकी कहानी ज्वार-भाटा में भारतीय मूल्यों और भारतीय संस्कारों की स्पष्ट झलक प्रतिबिंबित होती है. यह कहानी समुद्री में उठे तूफ़ान और तूफ़ान से समुद्र में उठे ज्वार-भाटा पर मुख्य रूप से केन्द्रित है. समुद्र में उठे तूफ़ान का ज्वार-भाटा व्यक्तियों की सजी-संवरी दुनिया को तहस नहस करदेने के बाद मनुष्य फिर से अपनी जिंदगी को आबाद कर लेताहै परन्तु मनुष्य के अपने जीवन में उठे ज्वार-भाटे के द्वारा तबाह हुई जिंदगी फिर से कभी आबाद नहीं होती है. कहानी के सार के रूप में हरनाम की बेटी सोनिया एक विदेशी युवक से मंदिर में हिन्दू धर्म के विधि-

विधान और रीति-रिवाज के अनुरूप शादी करके विदेश चली जाती है परन्तु विदेश में उसका पति उसे देह व्यवसाय में ढकेल देता है. इस जिंदगी से तंग आकर सोनिया और दो अन्य लड़कियां आत्महत्या कर लेती हैं. यह समाचार फेंच अखबार में छपता है. उसकी फोटो देखकर उसका पिता हरनाम तूफ़ान में अपनी नाव लेकर चला जाता है और अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेता है. हरनाम मंदिर का प्रधान और समाज का महत्वपूर्ण व्यक्ति होने के कारण अपने जीवन के इस ज्वार- भाटे से उत्पन्न दुःख को बर्दास्त नहीं कर पाता है.

यह मॉरीशस का वही दौर था, जब समाज के बड़े-बुजुर्ग लोग समाज पर पूरा नियंत्रण रखते थे. अपने समाज को सुधारने की दृष्टि से लोगो को शराब पीने पर भी दण्डित किया जाता था. "हमारे समय में एक कायदा था. यदि किसी का जवान बेटा कहीं भी शराब के साथ पकड़ा गया तो शाम में बैठक लगती थी. बाप-बेटा दोनों दण्डित होते थे" 7 इस प्रकार मॉरिशस में भी समाज व्यवस्था को दंड के बन्धनों द्वारा ठीक किया जाता रहा है. इतना ही नहीं बल्कि मित्रता का अद्भुत उदहारण मॉरीशससीय साहित्य में देखा जा सकता है. "कृष्ण और सुदामा की दोस्ती कितनी अच्छी तथा मनोहारी थी, एक दूसरे के प्रति कितने श्रृद्धालु तथा विवेकी थे. दोनों के प्रेम की तथा अनुराग की उपमाएं आज तक दी जाती हैं. जब गरीब सुदामा कृष्ण से मिलने गए तो कृष्ण ने दौड़कर उसको गले लगाया और आदर भाव के साथ अपने पास बिठाया."8 इस देश के लोग कृष्ण और सुदामा की दोस्ती को साकार रूप में देखने की अभिलाषा रखते हैं.

हरनाम बहुत धार्मिक व्यक्ति होने के साथ-साथ वह भारतीय संस्कारों में पला बड़ा हुआ व्यक्ति है. उसके लिए धर्म ही सब कुछ है. हिन्दू धर्म के मानने वाले व्यक्ति के लिए रामायण के सत्संग में भाग लेना उसके लिए पुण्य के बराबर है. इसीलिए वह "कल रात हरनाम शम्भू के घर हो रहे रामायण के सत्संग में उपस्थित था9"इतना ही नहीं हरनाम को मंदिर का प्रधान भी चुन लिया जाता है. उसके सम्बन्ध में पुजारी कहता है "हरनाम महातो का इस गाँव में छोटे-बड़े सभी इसीलिए सम्मान करते हैं क्योंकि इस गाँव के हित के काम जितने इन्होने किये हैं उसे यहाँ के छोटे-बड़े सभी भली-भाँति जानते हैं. इन जैसा ईमानदार और रहमदिल अब इस गाँव में बहुत कम लोग रह गए हैं.10 "उसने "एक बार गंगा स्नान के अवसर पर गाँव के बड़े-बच्चों को नौका विहार करा चुकने के बाद उसने गाबी को घर भेज दिया था और अपनी पत्नी के साथ अकेले नाव में घूमने निकल बैठा था.11" इस प्रकार हरनाम को पारिवारिक एवं सामजिक गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति कहा जा सकता है.

हरनाम अपनी बेटी का विवाह हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार हिन्दू मंदिर में ही करता है उस लड़की का पति भी इसके लिए अपनी सहमति दे देता है. "वह सोनिया के साथ के अपने व्याह की कुछ रश्मों को हिन्दू ब्याह पद्धति में मान लेने को तैयार हो गया था. और मंदिर भी पहुँच गया था पुजारी जी से आशीर्वाद के लिए भी सहमति व्यक्ति की थी. 12"

गाँव में महाशिव रात्रि का पर्व मनाया जाने वाला है. "दस दिन के भीतर देश में महाशिवरात्रि का त्यौहार था. गाँव की सभा की ओर से तैयार हुआ था कि उस अवसर पर मंदिर में प्रधानमंत्री, शिक्षामंत्री और कृषिमंत्री, इन तीनों की उपस्थिति में हरनाम के सामाजिक और धार्मिक कार्यों के लिए उसका भव्य स्वागत किया जाना था" 13 परन्तु

वह उससे पूर्व ही अपनी बेटी के दुःख में मृत्यु को गले लगा लेता है.

यह रामदेव धुरंधर की मोड़ कहानी भारतीय पारिवारिक संबंधों के आस-पास घूमती है जो आपसी पारिवारिक संबंधोंऔर संबंधोंमें आई खटास पर केन्द्रित है. इस कहानी में रामेसर के पिता ने प्रलोभन के बाद भी हिन्दू धर्म परिवर्तन नहीं करते हैं और भयंकर गरीबी में जीवन यापन करते हुए स्वर्ग सिधार जाते हैं. "पिताजी का आदर्श मेरे लिए भूल-भुलैया नहीं था. जब भी पीछे घूमकर देखता, पिताजी की संतोष भरी मुस्कान मुझे साहस देती. भाई साहब की बात अलग थी. पिता जी ने नौकरी-रोटी के नाम पर उसूल को नकारा नहीं था. छटी पास थे. उन्हें पुलिस की भर्ती मिलने वाली थी, लेकिन एक धर्म संकट पैदा हो गया था. उन्हें तभी नौकरी मिल सकती थी, जब वे धर्म-परिवर्तन के लिए तैयार होते और पीछे मुड़कर तनिक भी नहीं देखते. वे तैयार नहीं हुए थे. उन के साहस की गाँव के लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी. कई पुष्प मालाएं मिली थी उन्हें.14" भारतीय संस्कार मनुष्य कोमानव धर्म परिवर्तन की स्वीकृति कभी नहीं देते हैं. बल्कि जिस देश जाती में जन्म लिया बलिदान उसियो पर हो जाते हैं.

अपनी विधवा मां के साथ में छोटा बेटा रहता है और बड़ा बेटा नाराज होकर घर से चला जाता है इससे उनके रिश्ते में खटास आ जाती है. "माँ बेटे के बीच के रिश्ते के टूटने का नाम टूटना ही कहलाता तो नहीं है. अपनों के बीच छोटी-मोटी झड़प होती ही है, वो क्षणिक होती है 15"**.** उनका बड़ा बेटा हरनाम अपनी पत्नी को लेकर दूसरी जगह रहने के लिए चला जाता है. उसने माँ को छोड़कर चले गए थे, उन्होंने उसे लौटकर भी नहीं देखा था. परन्तु "प्रसव-पीड़ा और दुःख दर्द के अवसर पर सहयोग की भावना भारतीय जीवन का मूल प्राण है. "मैं यह जानने के लिए उत्सुक हुआ कि वे माँ को लेने क्यों आये हैं. भाभी और एक बार प्रसव पीड़ा से कराहने वाली है? रामेसर - इस बार भगवान निराश न करे ....घर में एक नन्हा सा फूल खिले ! सुन्दर बच्चा, कोमल - कोमल हाथ पाँव, ! वह गाये.. झूमे... ठीक है न भाई. नाम तो हम सब का होगा न, मां को दादी बोलने वाला कोई तो होगा. तुम चाचा बनोगे.16"**.** रिस्ते-नातों की डोर ही भारतीय संस्कृति का मूल प्राण कही जा सकती हैं.

रामेसर की पत्नी पढ़ी लिखी है. वह हाथ से खाने की मना करती है लेकिन "यह मेरी गलती है न,कि तुम्हारे मना करने पर भी हाथ से भात खाती हूँ. भाभी, यहाँ तो हम हमेशा हाथ से भात खाते आये हैं. अब एक भाभी को खुश करने के लिए चम्मच से भात खाना, चाय उबालने के बाद अलग से चीनी और दूध का प्रयोग करना.. यह एक थोपा हुआ संस्कार नहीं होगा, भाभी ? सुनों, यहाँ का रिवाज है कि हाथ धो लेने पर वह मैला नहीं रह जाता. सच पूछो भाभी तो,चम्मच से खाने पर मुझे सही स्वाद ही नहीं मिलता. पेट नहीं भरता.17"**.** ग्रामीण सहज जीवन में विश्वास करते हैं परन्तु सदैव से सभ्यता उनके सहज जीवन में अड़चन उत्पन्न होती है. सादगी में सच्चाई और अधिक सभ्यता में दिखावा अधिक होता है.

रामेसर आज वर्षों बाद छोटे भाई के घर पर आया है वह माँ को कहता है कि "आज मुझे चौलाई की भाजी चाहिए, मसूर की दाल...टमाटर की चटनी...मोटा चावल....18". यह सामाजिक बंधनों की सादगी ही तो है परन्तुइसके उपरांतभाई को रात्रि विश्राम कैसे करवाया जाय. इस पर मां बेटे बात करते हैं. "भैया को कहाँ

सुलायेंगे, पंखे का यहाँ दरस नहीं. पिछले सप्ताह मां बीमार न हुई होती तो पंखा आ गया होता. अपनी नादानी पर हंसी आई. पंखा आ जाने से एक पूरा वर्तमान कैसे बदल सकेगा ? यहाँ अभाव के पाँव इतने लम्बे हैं कि भाई चाहे तो रातभर गिनते रहेंगे, तो भी अभाव के नाम बाकी रह जायेंगे.19"**.** मोड़ कहानी में भारतीय सम्बन्ध भयंकर गरीबी में भी किस प्रकार निभाए जाते हैं इसे भारतवासियों एवं भारत वंशियों के अतिरिक्त और कोई नहीं जान सकता है.

मां भाई के लिए खाना बना रही है. "मैंने उन्हें इस तरह मनोयोग से भोजन तैयार करते पहले कभी नहीं देखा. उनका कहना था कि पाक-कुशलता तो नारी का जन्मजात गुण है. कितनी भी हड़बड़ी में कुछ पकाए, उसमें रस रहेगा ही. परन्तु आज माँ का विश्वास कमजोर पड़ रहा था. बेटे को खिलाने में कोई खोट न रह जाय ! मनोयोग आवश्यक था.20"**.** किन्तु जब वे दोनों भाई, खाने का सामान लेकर घर देर से पहुंचते हैं **तब** माँ बिगड़ने लगी कि "भोजन ठंडा हुआ जा रहा है. मां के कंठ में मिठास थी. मिठास के साथ उनसे मां होने का गर्व झांक रहा था. उनका यह खुलापन देखकर मैंने पाया, भाई एकदम सुरक्षित है, लेकिन मैं मुडिया पहाड़ की तरह वर्षों से अभिशाप की परिभाषा बन गया हूँ.21". मॉरीशस में मुडिया पहाड़ सदियों से गिरमिटिया आप्रवासियों की यातनाओं का मूक साक्षी बनाकर खड़ा हुआ है.

भारत में आज भी बच्चों के माता निकल आने पर उसके उपचार से अधिक उसे फ़ैलने से रोकने पर अधिक ध्यान दिया जाता है. मॉरिशस में "इसके तो माता निकल आई है इसके निवारण के लिए सिरनी चढ़ानी होगी"22. यह एक बीमारी है. "माता" इसमें शुद्ध गाय का घी लगाने से बच्चे को राहत मिलती है. विशेष बात यह है कि तुम लोगों को किसी के यहाँ कुछ समय के लिए नहीं जाना है और दूसरों को भी घर में नहीं लाना है और हां सबसे आवश्यक है कि एक पवित्र जगह को साफ़ करके गाय के गोबर से लीपना होगा फिर सात देवियों की पूजा कर, पान, फूल, कपूर जलाकर चना और चावल फुलाकर चढ़ाना होगा"23. "सालाजी 'मा'अथवा 'नूवेल दे कुवेते' से यह चीजें लेते आयें, आज शाम को पूजा कर देंगे." 24. माता जैसे भयंकर रोग का उपचार गाय का घी और शुद्धिकरण के लिए गाय के गोबर से लीपा जाता है. " देखो प्रमोद बेटे. एक समय में हर घर में गाय होती थी. गाय से ही इस गाँव में बरकत हुई थी, शादी-व्याह, जमीन की खरीददारी, बच्चों की पढाई और सबसे बड़ी बात है कि हमारा स्वस्थ्य इसी से बना रहा"25. गौमाता से घर में निरंतर वृद्धि ही वृद्धि होती रहती है.

इसके बाद गाँव में एक गाय खरीदकर एक गौशाला बनाने की पहल की जाती है. "यह गाय पूरे गाँव की है. इससे गोबर, दूध आदि का सदुपयोग होगा. जो भी चाहे थोड़ी बहुत घास ला दे, जो भी इसकी सेवा करना चाहे व पानी पिला सकता है. साफ़ सुथरा रख सकता है"26. इसके बाद जो 'जो भी मंदिर में पूजा करने आता, एक नजर गौ माता को जरूर देखता.उसकी पूजा होने लगी. बात यहाँ तक पहुँच गई कि सुबह को गौ माता का चेहरा देखकर और आशीर्वाद लेकर कार्य पर जाएँ तो शुभ होगा"27. भारत और भारत वंशियों में गाय को पूज्य माना जाता है. आज वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सिद्ध हो गया है कि गाँव का गोबर और मूत्र में बहुत उपयोगी औषधीय गुण पाए जाते हैं.

"जब तनु पैदा हुई तो लाखों का नुकसान हुआ. बाप ने जहर खा लिया. पांच साल की हुई तो मां

पंगु हो गई. घर ही उजाड़ दिया. ससुराल जाएगी तो भी यही होगा. कोई न कोई अशुभ ! उसकी जन्मपत्री में यही लिखा है."28. "मैं अंधविश्वासों में विश्वास नहीं करता. आप लोग शादी की तिथि निश्चित कर दें. यशवंत ने निश्चय पूर्वक कहा.29 "उसके विवाहोपरांत, उस अभागी स्त्री को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है.

अपना स्वयं का घर बनने का विचार मन में आना भी भारतीय लोगों की विशेषता होती मानी जा सकती है जो पश्चिम के लोगों की सोच में नहीं होती है. "खुद नया घर हो. बैठकखाना, सोने के स्वतंत्र कमरे, रसोईघर, स्नानघर- इन सबका स्वतंत्र उपयोग हमारा परिवार पहली बार करे, तो मुझे अपूर्व सुख होगा."30. मॉरिशस के लोग भारतीय संस्कारों में पले बड़े होते हैं वे धर्म से इतर जीवन स्वीकारते ही नहीं हैं. वे गाय को माता ही नहीं कहते हैं बल्कि प्रणाम करते हैं. इस देश में गाय को शुभ माना जाता है. "अजी साहब गाय का घर के भीतर जाना और गोबर करना बुरा नहीं होता. इसे शुभ माना जाता है. नया घर तो मानों पवित्र हो गया. प्रणाम गौमाता ! विश्वनाथ जी ने हाथ जोड़ लिए और माथा झुका लिया."**31.**

"गृह-प्रवेश का दिन औरऔर समय निश्चित हुआ. विश्वनाथ जी की माँ कुर्सी पर बैठकर आई. वे बहुत आशक्त थी. विश्वनाथ जी की पत्नी, पुत्र, बहू-सभी नए घर में आकर बैठ गए थे. गणेश जी का चित्र, बंदनवार, मिठाइयां तथा गुलाबजल का छिड़काव-ये सब नवनिकेतन को नया रूप दे रहे थे. घर में आराम की सब सुविधाएं हो गई थीं."**32.**

निष्कर्ष: - मॉरीशस में हिंदी कथा साहित्य की चयनित कहानियों के विश्लेषण के उपरांत भारतीय जीवन मूल्य, रीति-रिवाज, संस्कार, धार्मिक विश्वास आदि की स्पष्ट झलक हमें यहाँ के जन-जीवन में परिलक्षित होती है, जो भारतीय संस्कृति की सीमाओं के विस्तार को विस्तृत कर उसे एक अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करती है. किसी भी देश के लेखकों के लेखन में उस देश काल की परिस्थितियों की स्पष्ट छाप अवश्य होती है. समुद्र है तो उगता और छिपता सूरज उनके जीवन का एक अंग होता है. भानुमती नागदान मॉरीशस की एक शसक्त कहानीकार हैं इनकी कहानियों में इस देश की स्त्री के जीवन में आने वाले बदलाव, परेशानियों, और पश्चिमी प्रभाव से समाज में उत्पन्न हो रहे बदलाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है.यह सत्य है कि समाज में निरंतर बदलाव हो रहे हैं मूल्य बदल रहे हैं, उनके जीवन यापन के तौर तरीके बदल रहे हैं. इनके द्वारा लिखी गई अधिकांश कहानियों में अस्मिता के नए स्वरों का आगाज हुआ है तथा सामाजिक जीवन में निरंतर हो रहे बदलावों और जीवन की त्रासद विडम्बनाओं को बड़ी बारीकी और बेबाकी से व्यक्त किया गया है. इन कहानियों में निजता के नितांत अलक्षित कोने को स्पर्श करती हुई दृष्टि समाज के सुदूर कोने तक जाती ही नहीं हैं बल्कि बहुत कुछ उजागर भी करती हैं.हमें ज्वार-भाटा कहानी हमें बतलाती है कि समुद्र के ज्वार-भाटा की तबाही से मनुष्य उबर भी सकता है लेकिन मनुष्य के जीवन में आये बदनामी के ज्वार-भाटा से कभी उबर नहीं सकता है. हरनाम अपनी बेटी की शादी करने के बाद, बेटी की मौत के सदमे को बर्दास्त नहीं कर पाता है और समुद्र में आये ज्वार-भाटा की विकराल लहरों की चपेट में आकर काल का ग्रास बन जाता है. भारतवंशियों के सगे सम्बन्धियों के मध्य संबंधों में आई हुई दरार के बाद भी संबंधों का सदभाव के साथ निर्वाह किया करते हैं. नवनिकेतन और गौमाता कहानी के माध्यम से हम भारत वंशियों के हृदय में गौ माता के लिए आज तक पूज्यनीय स्थान

बना होने के लिए उनके पूर्वजों के द्वारा दिए गए संस्कार आज तक जीवित ही नहीं हैं बल्कि अपने दैनिक जीवन में आज भी पूरी तरह से उपयोग में लाते हैं.

सन्दर्भ सूची:

1.भानुमती नागदान 'दरार' कहानी संग्रह 'सौसाल की सालगिरह' विद्याप्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ट स. 86
2.भानुमती नागदान मिनिस्टर कहानी संग्रह, कहानी थोडा रूमानी हो जाओ' पृष्ट सं. 110
3.भानुमती नागदान 'दरार' कहानी संग्रह 'आधुनक नारी' विद्याप्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ट स. 32
4.भानुमती नागदान 'दरार' कहानी संग्रह 'सौसाल की सालगिरह' विद्याप्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ट स. 78
5.भानुमती नागदान 'दरार' कहानी संग्रह 'दरार' विद्याप्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ट स. 110
6.भानुमती नागदान 'दरार' कहानी संग्रह 'सौसाल की बुधिया' विद्याप्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ट स. 41
7.भानुमती नागदान 'मिनिस्टर' कहानी संग्रह 'मिनिस्टर' विद्याप्रकाशन नई दिल्ली,पृष्ट स. 31
8.भानुमती नागदान 'मिनिस्टर' कहानी संग्रह 'दोस्ती' विद्याप्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ट स. 34
9.अभिमन्यु अनत कहानी ज्वार-भाटा, वसंत चयनिका, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,पृष्ठ सं. 202
10. अभिमन्यु अनत कहानी ज्वार-भाटा, वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस, वर्ष 1993,पृष्ट सं. 204
11. अभिमन्यु अनत कहानी ज्वार-भाटा, वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस, वर्ष 1993,पृष्ट सं. 209
12. अभिमन्यु अनत कहानी ज्वार-भाटा, वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993पृष्ट सं. 208
13. अभिमन्यु अनत कहानी ज्वार-भाटा, वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस, वर्ष 1993 पृष्ठ सं. 209
14. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993. पृष्ट सं. 72,
15. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993. पृष्ट सं. 71,
16. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993. पृष्ट सं. 76,
17. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस पृष्ट सं. 79,वर्ष 1993.
18. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993पृष्ट सं. 83-84,. 19. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993. पृष्ट सं. 84,
20. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993. पृष्ट सं. 82,
21. रामदेव धुरंधर, कहानी "मोड़", वसंत, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका मॉरीशस,वर्ष 1993. पृष्ट सं. 86
22. धनराज शम्भु, "गौमाता" कहानी संग्रह अस्मिता, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2017,पृष्ट सं. 73
23. धनराज शम्भु, "गौमाता" कहानी संग्रह अस्मिता, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली,वर्ष 2017,पृष्ट सं. 74
24. धनराज शम्भु, "गौमाता" कहानी संग्रह अस्मिता, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2017,पृष्ट सं. 75
25. धनराज शम्भु, "गौमाता" कहानी संग्रह अस्मिता, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2017,पृष्ट सं. 76
26. धनराज शम्भु, "गौमाता" कहानी संग्रह अस्मिता, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2017,पृष्ट सं. 76
27. धनराज शम्भु, "गौमाता" कहानी संग्रह अस्मिता, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली,वर्ष 2017.पृष्ट सं.78
28. डॉ. हेमराज सुन्दर, कहानी " वह अभिशापित नहीं थी" / रिमझिम, वर्ष पृष्ट सं.44
29. डॉ. हेमराज सुन्दर, कहानी " वह अभिशापित नहीं थी" / रिमझिम, वर्ष पृष्ट सं.48
30. डॉ. हेमराज सुन्दर, कहानी "नवनिकेतन" वसंत / रिमझिम, वर्ष पृष्ट सं. 15
31. डॉ. हेमराज सुन्दर, कहानी "नवनिकेतन" वसंत / रिमझिम, वर्ष पृष्ट सं.17
32. डॉ. हेमराज सुन्दर, कहानी "नवनिकेतन" वसंत / रिमझिम, वर्ष पृष्ट सं. 19